



CHETANA

International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Editorial

क्यों देते हो ज़हर अपने नौनिहालों को???

* डा.डी.पी.सिंह

रोजाना प्रातःकाल जब मैं अपने घर से रेडियो स्टेशन आता हूँ तो रास्ते में सुन्दर लिबास पहने, गले में टाई बांधे बहुत ही सुन्दर कपोत की भांति बच्चों का नजारा देखने को मिलता है। जब मुझे ही वो सुन्दर लग रहे हैं, तो उनके माँ-बाप को तो और ज्यादा अच्छे लगते होंगे, ऐसा मेरा मानना है। किन्तु ये उनकी कोरी कपोत-कल्पना ही है, ऐसा मेरे अनुभव का कहना है। क्योंकि कुछ वर्ष पहले जो इसी कपोत की भांति सजे-धजे बच्चे मुझे मिलते थे, वे आज 10-12 क्लास तक पहुँचते-पहुँचते पढाई-लिखाई छोड़कर पथहीन-बेकाम ईधर-उधर गांव की गलियों में घूमते दिखने लगे हैं। जिनमें से काफी की आँखों पर धूप के नहीं नजर के चश्मे नजर आने लगे हैं। इस दृश्य को देखकर मुझे असहजता हुई तथा कुछ केस-स्टडी करने का निश्चय किया।

इसके लिए जब मैं अभिभावकों से मिला, प्रत्यक्ष बात करके एवं अप्रत्यक्षतः निरीक्षण करने पर पाया कि कुछ बच्चे प्रतिदिन 20 से 35 किलोमीटर की एकतरफा यात्रा अपने स्कूल तक पहुँचने के लिए करते हैं।

यहाँ हमें अपने अकादमिक कल्पना को जागृत कर उस बच्चे को परानुभूति भाव से महसूस करना होगा। जिसे आधार बनाकर मैं यहाँ कुछ कहना चाहता हूँ। 35 किलोमीटर की यात्रा कोई 35 मिनट की सीधी यात्रा नहीं है, स्कूल तक जाने में बच्चे को कम-से-कम दो घंटे तक यात्रा करनी होती है अर्थात् प्रातःकाल 07.30 बजे लगने वाले स्कूल के लिए बच्चे को 05.30 से 06.00 के मध्य बस में बैठ जाना है, जिसके लिए तैयार होने के लिए प्रायः 04.00-04.30 तक उसे जागना ही है। यहाँ उस सुबह की पहली रात की बात भी कहना चाह रहा हूँ, जिसमें होमवर्क के नाम पर रात को 10.00 बजे से पहले बच्चे को सोने नहीं देते हैं। स्पष्ट है कि बच्चा 06 घंटे से ज्यादा की नींद नहीं ले पाता है। मेरी समझ में 06 घंटे की नींद 60 साल से बाद की आयु के लिए काम चलाऊ है। इस नन्हीं उम्र को 10 से 12 घंटे की नींद जरूरी है। यह सर्वविदित सत्य है कि अच्छे शिक्षित मानव के लिए पहली जरूरत अच्छा स्वास्थ्य होना है, जिसके लिए नींद बेहतरीन थैरेपी है।

यहाँ नींद के बाद बच्चा खाता क्या है? इस पर भी चर्चा करना जरूरी है। वर्णित अनुभव के अनुसार प्रायः 04.00-04.30 तक जागने में मम्मी के डायलॉग एवं क्रिया-विधियों पर ध्यान देना आवश्यक है। मम्मी का डायलॉग होता है, "उठ-जल्दी कर, बस का टाइम हो जायेगा, टॉयलेट में फ्रेश होकर आजा, मैं तेरा टिफिन तैयार कर देती हूँ।" बच्चे का दो मिनट-एक मिनट के एक दो बहाने सुनकर मम्मी थोड़े डांट वाले अंदाज में आ

जाती है, जिस कारण बच्चे अर्धनिद्रा की स्थिति में टॉयलेट जाकर प्रायः बिना फ्रेश हुए आ जाते हैं। जल्दी वाली-बस के आने के दबाव वाली मम्मी बच्चे को बाथरूम में ले जाकर नहला देती है, और स्कूल की निर्धारित वेशभूषा पहनाकर पूरा कपोत बना देती है। बैग में किताबें ठूसकर, टिफिन (एक-दो मुड़े हुए पराठे/साधारण चपाती, साथ में मिर्ची/आचार) रख देती है। फिर पापा या मम्मी साथ होकर बस में बिठाकर हाथ भी हिलाते हैं, बाय-बाय भी बोलते हैं।

ध्यातव्य है कि बच्चे को जहर देने की बात सुबह उठने से ही शुरू हो गयी है। प्लास्टिक या स्टील के टिफिन में बंद भोजन 10.30 से 11.00 बजे के आस-पास खुलेगा। जरा सोचिये वह गर्म पराठा या चपाती पांच घंटे तक हवा-रौशनी के सम्पर्क में रहे बिना क्या बन जाता है? क्या वह भोजन उस नौनिहाल के लिए सही है, कभी अपने शिक्षित पारिवारिक चिकित्सक से पूछकर देखना।

दूसरे, उस नौनिहाल की सबसे छोटी क्लास में कुछ दिनों के लिए सीसीटीवी रिकॉर्डिंग कीजिएगा। फिर उसे बारीकी से देखिएगा, आपको समझ आ जाएगी कि गांव की सरकारी अथवा सामान्य निजी स्कूल तथा लम्बा रुट तय कर पहुँचने वाली तथाकथित पब्लिक स्कूल के बच्चों की आँखों पर लगे चश्मा की गिनती में तुलनात्मक अंतर कितना है? एवं क्यों है? उस रिकॉर्डिंग में आप पाएंगे कि बच्चे अर्धनिद्रा में ऊँघ रहे होते हैं, उनके लिए टीचर कम, पोटी साफ़ करने वाली नौकरानी/नौकर ज्यादा होंगे। और सुबह की डांट से सिर्फ बाथरूम में जाना-आना कर मम्मी को राजी करने वाले बच्चे के पेट की गर्मी से आँखों की कमजोर रौशनी के सबसे पहले शिकार होते हैं। यही वजह है कि तथाकथित लम्बे रुट पर यात्रा कर पब्लिक स्कूल की तुलना में राजकीय या गांव की स्कूल में चश्मे कम लगे मिलेंगे।

यह तो मात्र एक बानगी है, इसी तरह पड़ौसी से पीछे नहीं रह जाये, इस लिए इन तथाकथित ज्यादा धन खर्च करवाने वाली स्कूल में प्रवेश दिलाकर धन-ठगी अलग मुद्दा है। घर में झगड़ा पढाई की गुणवत्ता का नहीं, बच्चों पर रुपया नहीं लगाना चाहते हैं, का होता है। और भी लम्बी फेरिश्त है मनो-सामाजिकी गतिकी विकास के मुद्दों की, जिन पर फिर आगे कभी चर्चा होगी।

हम अकादमिक जगत से जुड़े लोग क्या इसके लिए जागृति नहीं ला सकते? कि छोटे बच्चों को घर के पास वाली स्कूल में पढाये, जहाँ से बच्चा अर्ध-अवकाश में भी घर तक दौड़कर जा सके, कुछ खाना-नाश्ता करके आ सके। ऐसा करके हम उन नौनिहालों को माँ-बाप के हाथ से जहर देने से बच्चा सकते हैं, जो पहले दिन से ही बच्चे को बहुत बड़ा बनाने के चक्कर में कपोत बनाकर प्रसन्नता महसूस कर रहे हैं, जो कि पानी के भ्रम में तेजाब में हाथ डाल रहे हैं। ऐसे बच्चों की अंतःप्रेरणा कक्षा 10-12 तक पहुँचते दम तोड़ देती है। उनकी प्रगति अन्य मुक्त वातावरण वाली स्कूल के बच्चों से कम ही रहती है। टोर्च में लगी बैटरी के आगे बड़ा बल्ब लगाकर सुबह के उजियारे में मत उजाड़ो, उसे साँझ के अँधेरे में उपयोग के लिए संभाल कर रखो।

*** डा. डी. पी. सिंह**

संस्थापक, कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया, झुन्झुनू, राजस्थान
संस्थापक, फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन्स, नई दिल्ली
Email-drdp91@gmail.com, Mob.-9001005900
Website-kamalnishtha.org, echetana.com, fcrs.in